₹ 50/-

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक उपक्रम

अनुप्रास



www.anuprasprakashan.com

वर्ष 03 अंक 05-06 जनवरी-दिसम्बर 2022

आलेख

प्रो. डा. रामावतार यादव
प्रो. (डॉ.) केष्कर ठाकुर, डॉ. कैलाश कुमार मिश्र,
विनोद नारायण झा, शंकर मधुपांश

कथा

श्याम दरिहारे, डॉ. वीणा ठाकुर,
डॉ. रंगनाथ दिवाकर, रमेश रञ्जन,
प्रो.(डॉ.) नवोनाथ झा

कविता

अशोक कुमार मेहता, अयोध्यानाथ चौधरी
अजित आजाद, प्रेम विदेह, देवानन्द मिश्र
सुभाष कुमार कामत

समीक्षा/गजल/लघुकथा/संस्मरण/यात्रा पत्रा/अनुवाद आ बालबाड़ी

अनुप्रास वर्ष 03 अंक 05-06 जनवरी-दिसम्बर 2022



समकालीन मैथिली साहित्यिक रचनात्मक उपक्रम

वर्ष : 03 अंक : 05-06 जनवरी-जुलाइ 2022, ₹ 50/-

सम्पादकीय कार्यालय

इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
मो. +91 88629 77228
www.anuprasprakashan.com
ईमेल : anuprasprakashan@gmail.com
गूगल पे/पे टी एम : 8862977228

उठह कवि, तौं दहक ललकार कने
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे?
—वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'



एहि अंकमे...

मातृभाषाक लेल नवोन्मेष...



सम्पादकीय

मातृभाषा माने माएक भाषा अर्थात् जाहि भाषाक संस्कारक अनुकरण बच्चा माएक गर्भहिसँ करैत अछि। गांधी जीक कहब छनि— बच्चाक मानसिक विकासक लेल मातृभाषा ओतबे जरूरी अछि जतेक बच्चाक शारीरिक विकासक लेल माएक दूध। कोनो राष्ट्रक क्षमता आ वैभव केर निर्माणमे भाषाक महत्वपूर्ण योगदान होइछ। संस्कार, साहित्य, संस्कृति, सोच, समन्वय, शिक्षा आ सभ्यता आदिक निर्माण, विकास आ ओकर वैशिष्ट्य मातृभाषेटामे सम्भव अछि। सहजता, सरलता, बोधगम्यता आ प्रवाहमयताक दृष्टिसँ मातृभाषाक स्थान शीर्षस्थ अछि।

शिक्षाक लेल भाषाक आवश्यकता होइत अछि। एहि विषयपर बहुतरास अनुसंधानसँ निष्कर्ष बहराएल जे प्रभावपूर्ण बुनियादी शिक्षाक लेल सभसँ उपयुक्त माध्यम बच्चाक मातृभाषे होइत अछि। नैसर्गिक रूपसँ मातृभाषामे बोधगम्यताक स्तर उच्चतम रहैत अछि तेँ मातृभाषामे कहल गेल बात बच्चा आसानीसँ समझि जाइत अछि। कोनो तरहक अनुसंधान कार्य मातृभाषामे बहुत नीक जकाँ कएल जा सकैत अछि। एहीटासँ देश आ समाजक सर्वांगीण विकास सम्भव अछि।

विश्वक बहुतरास राष्ट्रक विकास आ ओकर संकल्प शक्तिक मूल्यांकन कएलाक बाद देखल गेल अछि जे मातृभाषाक आन कोनो विकल्प नहि अछि। चीन आ जापान तँ एकर सद्य: उदाहरण अछि— जे मातृभाषाक माध्यमसँ विकास क' आइ वैश्विक शक्तिक रूपमे स्थापित अछि।

वर्तमानमे केन्द्र सरकार दिससँ घोषित नव राष्ट्रीय शिक्षा नीतिक Table of Contents 1.7.21मे कहल गेल अछि— 'छात्र लोकनिक सुविधाक लेल नर्सरीसँ कक्षा पाँचधरि आ जँ संभव हो तँ कक्षा आठधरि मातृभाषामे शिक्षा उपलब्ध कराओल जाए।' हालहिमे 'मैथिली मचान'क एकटा लाइव कार्यक्रममे श्रीमती सबिता झा खान केर प्रश्नक जवाब दैत राष्ट्रीय शिक्षा नीतिक ड्राफ्टिंग कमिटीक सदस्य आ जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालयक प्राध्यापक मजहर आसिफ सेहो एहि बातक उल्लेख कएलनि अछि। ओना ई अलग बात जे एखन धरि बिहारक स्कूली पाठ्यक्रममे एकर अनिवार्यताक प्रति सरकारक रवैया प्रसंशसनीय नहि अछि। विचार करबाक गप्प ई अछि जे मैथिली संविधानक आठम अनुसूचीमे वर्णित भाषा थिक, जकर साहित्यक इतिहास रामायणकालसँ आबि रहल अछि। तकरा बादो आइ जँ मैथिली उपेक्षित अछि तँ ताहि लेल सरकारक संग-संग हम-अहाँ सेहो कम दोषी नहि छी। अपन वार्तालापक भाषा मैथिली रखबासँ लजाइत छी... अपन धिया-पूताक संग मैथिली बाजबासँ परहेज करैत छी। एकर अर्थ अछि जे हमरालोकनि बच्चाकेँ अपन परिवेशसँ दूर आ संस्कृतिसँ अपरिचित बना ओकर मौलिक संस्कारककेँ जड़िसँ काटि देब' चाहैत छी। काल्हि जा क' हमरा लोकनिकेँ ई नहि हुअए जे हमरा बच्चा लग संस्कार नहि अछि। ताहिसँ पहिने अपन धिया-पूताक संग मातृभाषामे संवाद, चिंतन आ विचार-विमर्शकेँ अपन जीवनचर्यामे शामिल करू। हमरालोकनिक हृदयमे अपन मातृभाषाक प्रति पूर्ण समर्पण आ अनुराग-भाव होएबाक चाही। आत्म-गौरव केर वोध होएबाक चाही मातृभाषाक प्रति...

प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक डा. रामावतार यादव कहैत छथि— अपने क्षेत्रमे मैथिलीक स्थिति कमजोर अछि, प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीक पढ़ाइ कोना शुरू होएत एहि पर गंभीर चिंतनक संग एकरा दैनन्दिनक व्यवहारमे अनबाक आवश्यकता अछि।

डॉ. रंगनाथ दिवाकर मिथिला-मैथिली आंदोलन : इतिहास आ दशा-दिशा शीर्षक अपन आलेखमे लिखैत छथि जे सार्वजनिक जीवन वा कार्यालयमे आवश्यकतानुसार भले दोसरो भाषामे बात करी, मुदा अपन घरमे, समाजमे वा कोनो मैथिल संग कोनो परिस्थितिमे कतहु मैथिली छोड़ि हिन्दी-अंग्रेजीमे गप्प नहि करी। जे काज करैत छी ओहिमे मैथिलीक सर्वाधिक उपयोग करी। पंचायत अन्तर्गत पत्राचार, सूचनादि काज मुखियाजी/पंचायत सचिव मैथिलीमे करथि तँ एहिमे कोन व्यवधान? विद्यालय वा आन संस्था सेहो अपन पत्र व्यवहार मैथिलीमे क' सकैत अछि।

एतए एहि तथ्यक उल्लेख करब उचित बुझाइत अछि... जे हम मिथिला स्थित बेनीपट्टी, मधुबनीक एकटा विद्यालयमे वर्ष 2014सँ शिक्षकक रूपमे कार्यरत छी। दिसम्बर 2016सँ प्रभारी प्रधानाध्यापकक रूपमे पदभार ग्रहण कएलाहुँ। तहिएसँ विद्यालयक समस्त काज अनिवार्य रूपसँ मैथिलीमे होइत अछि। प्रत्येक दिन विद्यालयक चेतना सत्रमे 'जय-जय भैरवि...' केर प्रार्थनाक संग संविधानक प्रस्तावना सेहो मैथिलीमे वाचन कएल जाइत अछि। वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे मिथिला क्षेत्रक समस्त विद्यालयमे प्राय: मैथिले शिक्षक होएताह। जँ सभ शिक्षकगण अपन-अपन विद्यालयमे मातृभाषा मैथिलीकेँ नेह, निष्ठा आ निष्काम सेवाभावसँ लागू करैत छथि तखन प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीक पढ़ाइ सुगम भ' जाएत! एहि आशाक संग...



प्रो. डा. रामावतार यादव
काठमाण्डू, नेपाल
ramyadav1942@gmail.com

प्रसिद्ध भाषाविद्, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, नेपालक पूर्व उपकुलपति, तीन बेरि प्रज्ञा पुरस्कार विजेता, प्रथम *नेपाल विद्यापति मैथिली अनुसन्धान पुरस्कार, डा. धीरेन्द्र साहित्य-संस्कृति पुरस्कार* विजेता आ कतेकहु ग्रंथक रचयिता प्राध्यापक डा. रामावतार यादवक अनेकहु अनुसंधानात्मक आलेखसभ नेपाल, भारत, अमेरिका, विलायत ओ जर्मनीमे प्रकाशित छैन्हि। ब्रिटिश काउन्सिल छात्रवृत्ति, विलायत; फुलब्राइट छात्रवृत्ति, अमेरिका; ब्रिटिश काउन्सिल भीजिटर, लण्डन; सीनियर फुलब्राइट भिजिटिङ्ग स्कौलर, अमेरिका; अलेक्जाण्डर फौन हुम्बोल्ट पोष्टडौक्टोरल सीनियर रिसर्च फेलोशिप, जर्मनी आदि प्राप्त कएनिहार प्रा. डा. यादव *मिथिला रत्न, मिथिला विभूति, पहिल शब्दकोशकार पंडित भवनाथ मिश्र साहित्य शिखर सम्मान* एवं *चेतना समिति ताम्रपत्र सम्मान*सँ सेहो सम्मानित छथि।

ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनक Asia, Pacific and African Collectionsमे अनुरक्षित ओ भारतविद्याशास्त्रज्ञ हेनरी टोमस कोलब्रुककृत *Comparative Vocabulary* शीर्षकक अद्यतन अपठित, अशोधित, एवम् अप्रकाशित हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे उपलब्ध अमरसिंह-विरचित संस्कृतक प्रख्यात कोश-ग्रन्थ *अमरकोषः*क 370 शब्दक मैथिली पर्याय - विहङ्गम दृष्टि

1. पृष्ठभूमि

इतिहास साक्षी अछि: प्राचीन संस्कृत/प्राकृत ग्रन्थसबहुमे नव्य भारतीय–आर्यभाषा मैथिलीक लुप्तप्राय, अप्रयुक्त, एवम् दुर्लभ शब्दसभक उपलब्धताद' गहन गवेषणाकए मैथिली भाषाक प्राचीनता ओ भाषावैज्ञानिक ऐतिहासिकताक संस्थापनार्थ/प्रतिपादनार्थ कतेकहु मैथिली–भाषी संस्कृतज्ञ विद्वज्जन अदौ कालसँ भगीरथ प्रयत्न कए रहल छथि। ताहूमे जाहि कालसँ उमेश मिश्र पटना कौलेज, पटनामे 1938 ई.मे आयोजित मैथिली साहित्य परिषदक अपन अध्यक्षीय भाषणमे *वेदान्तसूत्र*क नवम् शताब्दीक *शंकरभाष्य*क वाचस्पति मिश्रकृत *भामती* टीकामे विशुद्ध मैथिलीक आधुनिक अर्थवाला एकगोट अति प्रचलित शब्द *'हड़ि'*[1] उपलब्ध होएबाक सन्दर्भक सगौरव घोषनाद कएलैन्हि (देखू: Subhadra Jhā 1958: 31–32) ताहि दिनसँ एहि विषयमादे अन्वेषण आओरो बेसी घनीभूत भेल–सन बुझना जाइत अछि। एहन प्रबुद्ध अन्वेषकलोकनिमे अति लब्धप्रतिष्ठ ओ अग्रगण्य छथि Subhadra Jha (1939–40), शशिनाथ झा (1984, 2009), तथा योगानन्द झा (1988)। प्रसङ्गवशात्, वरेण्य बङ्गाली विद्वान Sukumar Sen (1944)क उल्लेख सेहो अपरिहार्य बुझना जाइत अछि। परञ्च, ध्यातव्य जे उपर्युक्त विद्वानलोकनि प्राचीन/वैदिक संस्कृत एवम् प्राकृत ग्रन्थसभक लौकिक संस्कृत भाष्य/टीका वा कहू जे टीकाक टीकामे उपलब्ध मैथिली पर्यायी शब्दसभक मात्र चयन–सङ्कलन कएल अछि, मूल ग्रन्थपाठसँ नहि।

प्रस्तुत आलेखक अभीप्सित इष्ट अछि ईष्ट इण्डिया कम्पनीक एकगोट अत्युच्च फिरिङ्गी पदाधिकारी, पाश्चात्य भारतविद्याशास्त्र (Western Indology) विधाक संस्थापक–प्रख्यापक, एवम् प्रकाण्ड संस्कृतज्ञ Henry Thomas Colebrooke (1765–1837[2])क मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे प्रदत्त अतुल्य अवदानद' संक्षेपमे चर्च करब। ज्ञातव्य जे कठोर साधना एवम् कष्टसाध्य परिश्रमकए हेनरी कोलब्रुक **प्रथमतः** अमरसिंह–विरचित संस्कृतक प्रख्यात कोश–कला ग्रन्थ *अमरकोषः*क 370 संस्कृत शब्दक **मिथिलाभाषा** (अर्थात् **मैथिली**) पर्यायक सङ्गहि भारतभरिक अन्यान्य कुल 12गोट स्थानीय/देशी भाषाक (Vernacular[3]) पर्यायवाची शब्दसभक तुलनात्मक शब्दसंग्रह *Comparative Vocabulary* (1807)क एकगोट सुगठित, सुपठनीय, एवम् विलक्षण हस्तलिखित पाण्डुलिपि देवनागरी लिपिमे तैयार कएने छलाह। ई भाषासभ अछि: मराठी, गुजराती, कन्नडा, तेलुगु, तामिल, कश्मीरी, पंजाबी, हिन्दी, नेपाली, **मिथिलाभाषा** (अर्थात् **मैथिली**), बङ्गाली, तथा ओड़िया। ज्ञातव्य जे ई पाण्डुलिपि अद्यतन अपठित, अशोधित, एवम् अप्रकाशित रूपैँ British Library, Londonक Asia, Pacific and African Collectionsमे अनुरक्षित अछि ओ संयोगवशात् एहि गौरवशाली कृतिक आधिकारिक डिजिटल प्रतिलिपि हमरालग सेहो अछि एवम् एहिमादे हमर अनुसन्धान गतिमान अछि (देखू: यादव 2020b, Yadav Forthcoming)।

ताही कालखण्डमे, अर्थात् उनैसम शताब्दीक पहिल दशकक उत्तरार्द्धमे, बेङ्गाल प्रसिडेन्सीक आन–आन जिलाक सङ्गहि मैथिली–भाषी क्षेत्र पूर्णिया जिला ओ भागलपुर जिलाक तथ्याङ्कगत सर्वेक्षण ('Statistical Survey') कएनिहार ईष्ट इण्डिया कम्पनीक एकगोट आओरो महती फिरिङ्गी मेडिकल अधिकृत Dr. Francis Buchanan MD (Circa 1810)क मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे प्रदत्त पुरोगामी ओ मौलिक अवदानक विस्तृत विवेचनहेतु देखू हमर अनुसन्धानात्मक अवदान (यादव 2020a तथा Yadav ed. 2021)।

आ, तहिना, उनैसम शताब्दीक सातम दशकक उत्तरार्द्धमे प्रकाशित S. W. Fallon (1879)क हिन्दुस्तानी–अङरेजी शब्दकोशमे उपलब्ध **तिरहुतीक** (अर्थात् **मैथिलीक**) किछु हेराएल परञ्च अति मनोहारी शब्द/लोकोक्तिसभक रोचक वर्णन–विवेचनहेतु द्रष्टव्य अछि गोविन्द झाक (2010) वैदुष्यपूर्ण आलेख।

ओना आब एतबाधरि कहिए दी जे मिथिलाक्षरसँ संस्कृतमे अनुवाद करबामे परम प्रवीण ओ निष्णात संस्कृतज्ञ Henry Thomas Colebrooke पहिल एहन विद्वान छथि जे रोमन लिपिक अङरेजी भाषाक माध्यमैं "On the Sanscrit and Prācrit languages" शीर्षकक एकगोट अति गम्भीर प्रकृतिक आलेख कलकत्ताक *Asiatick Researches* नामक प्रसिद्ध जर्नलमे प्रकाशित कए **प्रथमतः** मैथिली भाषाक उल्लेख **मैथिल** वा **तिरहुतीय** *'MAIT'HILA,* or *Tirhutīya'* कहि एकर विस्तृत सन्दर्भ पर्यन्त प्रस्तुत कएने छलाह:

MAIT'HILA, or *Tirhutīya,* is the language used in *Mithīlà*, that is, in the *Sircár* of *Tirhūt*, and in some adjoining districts, limited however by the rivers *Cusī* (*Causicī*) and *Gandhac* (*Ghandhacī,*) and by the mountains of *Nepál*; it has great affinity with *Bengálī*; and the character in which it is written differs little from that which is employed throughout Bengal. In *Tirhūt*, too, the learned write *Sanscrit* in the *Tirhutīya* character, and pronounce it after their own inelegant manner. (Colebrooke 1801: 225)

2. मैथिली-भाषी विद्वज्जन-सङ्कलित/प्रकाशित शब्दसूची: संक्षिप्त वर्णन-विश्लेषण

आब ई बात सार्वजनीन भ' गेल अछि जे दशम–एगारहम शताब्दीधरि अबैत–अबैत मैथिली भाषा अपन आद्यभाषा (*Ursprache*) केन्द्रीय मागधी प्राकृत वा कहू जे मागधी अपभ्रंशसँ पूर्णरूपेण विलगभए एकगोट स्वतंत्र भाषिका वा पूर्ण भाषारूपैं विकसित/प्रस्फुटित भ' चुकल छल। एही भाषिक–ऐतिहासिकता सिद्ध करबाक प्रयोजनहेतु मैथिली भाषाविज्ञानक वरिष्ठ राजनयिक Subhadra Jha (1939–40) बड़ौदासँ प्रकाशित *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* नामक प्रसिद्ध जर्नलमे "Maithili equivalents to vernacular words found in Sarvanand's commentary on Amarakośa" शीर्षकक गम्भीर प्रकृतिक अनुसन्धानपरक आलेख प्रकाशित कए वन्द्यघाटीय सर्वानन्द–विरचित *अमरकोषः*क टीका *टीकासर्वस्व*मे (1159 CE) उपलब्ध कुल 300 मैथिली–पर्यायवाची शब्दसभक मनोयोगपूर्वक आकलन, सङ्कलन, ओ तकर विशद् वर्णन–विश्लेषण पर्यन्त प्रस्तुत कएलैन्हि। सुभद्र झाक प्रस्तुति निम्न शीर्षक अन्तर्गत कएल गेल अछि जे निचाँ उद्धृत अछि:

(i) Sarvānanda's Words
(ii) Early and Modern Maithili Equivalents
(iii) Sources of the Maithili Equivalents
(iv) Sanskrit Equivalents
(v) English Translation, and
(vi) Sarvānanda's *Kāṇḍa*, *Varga*, and *Śloka*. (p. 107)

वस्तुतः, पढ़लासँ इहो अभिज्ञात होइत अछि जे सुभद्र झाक आलेख हुनकहुसँ पूर्वक तीनिगोट बंगाली विद्वानसभक, यथा, बसन्त रंजन राय, जोगेश चन्द्र राय, तथा एन. पी. चक्रवर्तीक, बङ्गाली (ओ हिन्दी) भाषिक अवदानसभक संपूरक रूपैं प्रस्तुत भेल अछि — एहि कारणैं जे ओलोकनि अमैथिलीभाषी भेलासन्ताँ सम्भवतः सही मैथिली–पर्याय चयन/आकलन कार्यमे अक्षम–सन सिद्ध भेल छल होएताह (देखू Jha 1939–40: 106)।

ततःपर, चारि वर्ष पश्चात् Sukumar Sen (1944)सर्वानन्दक *टीकासर्वस्व*मे उपलब्ध बंगाली भाषाक सङ्गहि आनहु नव्य भारतीय–आर्यभाषासभक कुल 449 शब्दक बृहत सूची पूनासँ प्रकाशित भारत भाषाविज्ञान समाजक (Linguistic Society of India) प्रसिद्ध जर्नल *Indian Linguistics*मे प्रकाशित कएलैन्हि। देवनागरी लिपिक वर्णानुक्रम रूपैं प्रस्तुत एहि शब्दसूचीमे बंगाली भाषाक अतिरिक्त प्राचीन एवम् मध्ययुगीन अपभ्रंश वा कहू जे मैथिलीक सिद्ध कविलोकनिकृत *चर्यापद,* चण्डेश्वरकृत *गृहस्थ–रत्नाकर,* ज्योतिरीश्वरकृत *वर्ण–रत्नाकर* आदि अपभ्रंश ग्रन्थरत्नसबहुसँ सेहो शब्द–चयन कएल गेल अछि — जाहिसँ नव्य भारतीय–आर्यभाषासभक ऐतिहासिक–तुलनात्मक–भाषावैज्ञानिक अध्ययन–अनुशीलन एवम् वर्णन–विश्लेषण कार्यमे प्रशस्त साहाय्य होएतैक। ध्यातव्य जे, संभवतः प्रजाति–केन्द्रिक भावसँ अभिभूतभए, पूर्वमे उल्लिखित तीनिगोट बंगाली विद्वानक अवदानप्रति प्रचुर आभारोक्ति व्यक्त करैतकाल सुकुमार सेन–सन सुप्रसिद्ध विद्वान सुभद्र झाक अप्रतिम अवदानक कतहु उल्लेखहु नहि कएल — जे हुनकसँ पाँच वर्ष पूर्वहि भारतक एकगोट प्रतिष्ठित जर्नलमे प्रकाशित भए प्रसिद्धि पर्यन्त प्राप्त कए चुकल छल।

सुकुमार सेनक चालीस वर्ष पश्चात्, शशिनाथ झा (1984) "अमरकोशक टीकामे उपलब्ध मैथिली शब्द" शीर्षकक पूर्ण–शोधित ओ अति वैदुष्यपूर्ण आलेख पटनासँ प्रकाशित एकगोट अप्रत्यायक ओ कृशकाय जर्नल *मैथिली अकादमी पत्रिका*मे प्रकाशित कए सर्वानन्दक *टीकासर्वस्व*मे उपलब्ध एवम् सत्तामीमांसात्मक क्षेत्रसबहुसँ (Ontological domains) सम्बद्ध 'वनौषधि', 'सिंहादि', 'मनुष्य', 'क्षत्रिय', 'वैश्य', 'शूद्र', आदि शीर्षक अन्तर्गत अनेकहु मैथिली शब्दसभक सूची अति मनोयोगपूर्वक प्रस्तुत कएलैन्हि। सङ्गहि ओ श्रीकरोपाध्यायकृत *व्याख्यामृत,* अच्युतोपाध्यायकृत *व्याख्याप्रदीप,* चतुर्भुज शर्माकृत *नामलिङ्गानुशासनवृति,* मुकुन्द झाकृत *अमरमैथिलभाषाविवृति,* तथा चन्द्रधारी सिंहकृत *चन्द्रिका टीका* (1957) एवम् *नामलिङ्गानुशासनं नाम अमरकोषः* (2001)सन प्रसिद्ध मैथिल विद्वानलोकनिक बनाओल अमरकोशक बहुमूल्य टीकासभक गहन अध्ययन/गवेषणा सेहो कएलैन्हि। मैथिली भाषाविज्ञान ओ विशेषतः मैथिली शब्दकोशशास्त्रक उद्भव ओ विकासक इतिहासमे एहि आलेखक महत्त्व स्वतःसिद्ध अछि। ओना पढ़लासँ अभिज्ञात होइत अछि जे शशिनाथ झा सुभद्र झाक वैदुष्यपूर्ण कृतिसँ कि त' पूर्णतः अनभिज्ञ छथि आ कि हुनक सन्दर्भ देबाक काजदिसि अनिच्छुक/विमुख। पच्चीस वर्ष पश्चात् उपर्युक्त आलेखक परिमार्जित–परिशोधित पुनर्प्रकाशित प्रारूप शशिनाथ झा (2009)मे पर्यन्त Subhadra Jha (1939–40)क कतहु उल्लेख नहि कएल गेल अछि, तखन Sukumar Sen (1944) तथा योगानन्द झा (1988)क त' कथे कोन।

शशिनाथ झा (1984)क चारि वर्ष पश्चात, एगारहम–बारहम शताव्दीक प्रसिद्ध जैन वैयाकरण हेमचन्द्र सूरि (1089–1172)कृत प्राकृत व्याकरणक परिशिष्ट *देशीनाम–माला*मे उपलब्ध गोट 'शताधिक' मैथिली

शब्दगुच्छ ओ मैथिली ऐतिहासिक–भाषाविज्ञानमे तकर महती योगदानद' योगानन्द झा (1988) "देशीनाममाला आ मैथिली" शीर्षकक एकगोट अति तर्कपूर्ण ओ शोधपूर्ण आलेख पटनासँ प्रकाशित *भाखा* (आब प्रकाशनातीत) नामक जर्नलमे प्रकाशित कएलैन्हि। 'देशी' अर्थात् स्थानीय/प्रादेशिक शब्दसभक एहि गवेषणात्मक अध्ययनसँ मैथिली भाषा–साहित्यक उद्‌भव ओ विकास तथा मैथिली शब्दकोशशास्त्रक उत्पत्ति–विमर्शमे प्रशस्त संबल प्राप्त होएत से विश्वास कएल जा सकैत अछि। ओना योगानन्द झाक (1988) एहि गरिमामय कृतिअहुमे शशिनाथ झाक (1984) सङ्गहि अन्य पूर्ववर्ती अग्रज शोधकर्तालोकनिक, यथा Subhadra Jha (1939–40), Sukumar Sen (1944) आदि विद्वान–शोधकर्ताक, अप्रतिम अवदानक सन्दर्भोल्लेख पर्यन्त सर्वथा अप्राप्य अछि।

एम्हर आबि, राम चैतन्य धीरज (2013: 24–25) वैदिक संस्कृतमे लिखित ऋग्वेदमे नव्य भारतीय–आर्यभाषा मैथिलीक 50गोट शब्दक उपलब्धताक दावा करैत एकगोट अति विवादास्पद/कलहपूर्ण ओ अविश्वसनीय अध्यर्थन प्रस्तुत कएलैन्हि — ओना एहि कृतिमे पर्यन्त अग्रज अध्येता–अनुसंधातालोकनि, यथा, सुभद्र झा, सुकुमार सेन, शशिनाथ झा, ओ योगानन्द झाक अप्रतिम अवदानसभक कोनहु चर्च उपलब्ध नहि अछि। धीरज (2013)मे उदाहरणार्थ प्रस्तुत शब्दमध्य ऋग्वेदक किछु शब्द — जकर रूपिमगत भाष्य 'gloss' ओ अङरेजी अनुवाद व्याख्यासहित निचाँ प्रस्तुत कएल गेल अछि —

काटब <kāṭ=a–ba> cut=LINK–FUT–1/2HON 'I/You (HON) will cut'
काटब <kāṭ=a–ba> cut=LINK–INF/GERUND 'The act of cutting'
सुनू <sun–ū > hear–IMP–2HON +1 'You (HON) listen to me'

स्पष्टत: काल, पुरुष, कक्ष, आदरार्थी आदि व्याकरणिक प्रत्ययसभसँ (affixes) अन्वित आधुनिक मैथिली भाषाक समापिका क्रियारूप–सन प्रतीत होइत अछि। धीरजक अध्यर्थनसँ आभासित होइत अछि जे कालान्तरमे बहुत पाछाँ जन्मल ओ केन्द्रीय मागधी प्राकृत/अपभ्रंशसँ नि:सृत (देखू गंगानन्द सिंह 1950, गोविन्द झा 1968, Tsuyoshi Nara 1979, Tanmoy Bhattacharya 2016) मैथिली भाषाक व्याकरण — जाहि भाषाक नामहुक एकगोट रूप ओ तकर उच्चारण पर्यन्त अद्यतन स्थिर नहि भ' सकल अछि (देखू यादव 2020a, b) — अपन जन्महुसँ पूर्वक प्राचीन वैदिक छान्दस/संस्कृतमे लिखित ऋग्वेदक व्याकरणकेँ गम्भीर रूपेँ प्रभावित कएने अछि। जेना एतबा कहब मात्र प्रशस्त नहि होअए, 6 वर्ष पश्चात, पुन: राम चैतन्य धीरज (2019) बेहिचक इहो कहि गेलाह अछि जे प्राचीन वैदिक संस्कृत आ नव्य भारतीय–आर्यभाषा मैथिलीक जन्मकाल सँगहि अछि। स्पष्टत: एहन भ्रमपूर्ण, अपुष्ट एवम् तथ्यहीन कथनसभक पुष्टिहेतु बहुतराश ऐतिहासिक–तुलनात्मक भाषाविज्ञान एवम् ध्वनि–परिवर्तनगत अध्ययन–अनुसन्धानक अपरिहार्यता अछि — से मैथिली भाषा–साहित्यक अनुसन्धित्सु सुधी पाठकजन बुझताह। अलमति विस्तरेण।

3. कोलब्रुक–सङ्कलित *तुलनात्मक शब्दसङ्ग्रह*: संक्षिप्त विवरण

3. 1. पाण्डुलिपि

जेना कि पूर्वमे कहल गेल छल एहि मूल्यवान सुपठनीय एवम् सुगठित अक्षरसँ हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे ईष्ट इण्डिया कम्पनी कालक भारत (आ नेपालक) कुल 12गोट नव्य आर्य ओ द्रविड़ भाषाक पर्यायवाची शब्दसभ समाविष्ट भेल अछि।

कोलब्रुक महोदयक हस्तलिखित पाण्डुलिपिक भाषिक, वर्तनीगत, शब्दगत, ओ शब्दकोशजन्य विशिष्टतासभक वर्णन–विश्लेषणहेतु द्रष्टब्य अछि हमर प्रकाशनोन्मुख आलेख Yadav (***Forthcoming***)। एहि ठाम ई समीचीन होएत जे एहि पाण्डुलिपिमादेँ ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनद्वारा हमरा प्रदत्त जानकारी समग्रत: पाठकक अवगतार्थ/सुविधार्थ निचाँ प्रस्तुत कएल जाए।

Number: **8W330478P**
Shelfmark: APAC: Mss IO San 156, 157
Title: *A Polyglot Vocabulary, Prepared for Colebrooke* (Italics added)
Author: H. T. Colebrooke

Vol. 1 महाराष्ट्रभाषा (अर्थात् मराठी), गुज्जरभाषा (अर्थात् गुजराती), कर्नाटकभाषा (अर्थात् कन्नडा), तैलंगभाषा (अर्थात् तेलुगु), द्रबिड़भाषा (अर्थात् तामिल)।

Vol.2 काश्मीरभाषा (अर्थात् कश्मीरी),पंजाबअन्तरगतजालंधर-भाषा (अर्थात् पंजाबी), मध्यदेशभाषा (अर्थात् हिन्दी), पर्वतीभाषा (अर्थात् नेपाली), **मिथिलाभाषा** अर्थात् **मैथिली**), बंगलाभाषा (अर्थात् बंगाली/बांगला), उत्कलभाषा (अर्थात् उड़िया)।

Vol. 1 ओ Vol. 2क संकेत Pencilसँ देल गेल अछि ।
स्पष्टत: Vol. 2क शब्दसङ्ग्रहमे कुल ७गोट नव्य आर्य भाषाकसङ्ग मैथिली भाषासेहो समाविष्ट भेल अछि।
अर्थात् Vol. 1 ओ Vol. 2मे मिलाकए समग्रमे आर्य भाषा परिवारक भाषाक संख्या कुल 9 तथा द्रबिड़ भाषा परिवारक भाषाक संख्या कुल 3 – 9 + 3 = 12गोट भाषा समाविष्ट अछि।

ध्यातब्य जे अन्यत्र कोलब्रुकसँ सम्बद्ध सन्दर्भ–साहित्यमे एहि हस्तलिखित पाण्डुलिपिक शीर्षक *Comparative Vocabulary* रूपेँ प्रस्तुत भेल अछि।

द्रष्टब्य इहो जे एहि शब्दसङ्ग्रहक मूल प्रविष्टिक भाषा **संस्कृत** ध्वनितात्विक रूपेँ शुद्ध आ कहु जे अतिशुद्ध देवनागरी वर्तनीमे अन्तिम वर्ण (grapheme)मे हलन्तक प्रयोग कए **संस्कृत्** रूपेँ प्रस्तुत भेल अछि।

एहि गौरवशाली कृतिक आरम्भ *श्रीगणेशायनम:* सँ होइत अछि। तहिना एकर अन्त *इतिअसुरतृतीयकाण्डअव्ययवर्ग:* सँ होइत अछि।

3. 2. मूल प्रविष्टि

ई बात आब सर्वविदित अछि जे एहि *शब्दसङ्ग्रहक* मूल प्रविष्टि *अमरकोष:*मे समाविष्ट संस्कृत भाषाक चयनित शब्दसभ अछि। एकर पहिल मूल प्रविष्टि अछि *स्वर्ग:* जकर मैथिली पर्याय *स्वर्ग* देल गेल अछि आ एकर अन्तिम मूल प्रविष्टि अछि *अर्वाक्* जकर मैथिली पर्याय अछि *दक्षिण दिशा १ दक्षिरा दिशा २।*

3. 3. वर्तनी

मूल प्रश्न अछि: केहन अछि त' मैथिली शब्दसंग्रहक एहि पुरानतम हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे प्रयुक्त देवनागरी वर्तनीक स्वरूप? प्रथमहि दृष्टिमे ई निष्कर्ष नि:सृत होइत अछि जे उनैसम शताब्दीक प्रथम दशकहिमे मैथिलीकहेतु प्रयुक्त देवनागरी वर्तनी वर्तमानमे तथाकथित मानक मैथिलीमे प्रयुक्त वर्तनी सदृश परिपक्व, सुदृढ, ओ अद्वयार्थक रूपेँ स्थिर भ' गेल छल। जे परम संतोषक गप।

3. 4. मैथिली पर्यायवाची शब्दसभ

मैथिली पर्याय सङ्कलन विधिमादे पूर्ण सूचना अज्ञात अछि: अर्थात् ई विषय अद्यतन अनुसन्धानक विषय अछि। विज्ञप्तत: कोलब्रुक स्वयम् निष्णात संस्कृतज्ञ छलाह, तिरहुता लिपिसँ संस्कृतक नागरी लिपिमे लिप्यन्तरण कार्यमे परम प्रवीण छलाह, परञ्च ओ तिरहुत सरकारक कोन गामक कोन संस्कृतज्ञ मैथिली–भाषी पण्डित/ब्राह्मणकेँ अनुसन्धान सहायक/शब्द सङ्कलक रूपेँ नियुक्तकए *अमरकोष:*क मूल प्रविष्टिसभक मैथिली पर्यायवाची शब्दसूची निर्माण करबाक अभिभारा देलैन्हि से सूचना अद्यतन अज्ञात अछि।

ओना ईष्ट इण्डिया कम्पनी कालक पूर्वक हमर अनुसन्धान कार्य ई इंगित करैत अछि जे फ्रान्सिस ब्युकाननहिजकाँ हेनरी टोमस कोलब्रुक सेहो James Mackintosh (1806)क 'Plan of a Comparative Vocabulary' शीर्षकक कार्यपत्रकेँ प्रतिमान मानि तकरहि साहाय्यसँ ई गरिमामय शब्दसूची तैयार कएने होएताह: उक्त कार्यपत्रक विस्तृत विवरणहेतु देखू Yadav (ed. 2021: 36)।

निचाँ पाठकगणक अवलोकनार्थ/अवगतार्थ कोलब्रुकक गौरवशाली कृतिक हस्तलिखित पाण्डुलिपिसँ प्रतिदर्श स्वरूप आदि ओ अन्तिम पृष्ठक स्क्यान–प्रतिकृति प्रस्तुत अछि।

श्रीगणेशायनमः संस्कृत	काश्मीरभाषा	पंजाबअंतरगतजलंधरभाषा	मध्यदेशभाषा	पर्वतीभाषा	मिथिलाभाषा	बंगलाभाषा	उत्कलभाषा
स्वर्गः १ नाकः २ त्रिदिवः ३	सुरगु १ डुखरस्तु २दियगरु ३	सरग १ दुःखरहित २ देउघर ३	सरग १ दुखबिना २ देवत्योंकाघर ३	स्वर्ग	स्वर्ग	सरपुर १ देवलय २	स्वर्ग
अमराः १ निर्जराः २ देवाः ३ सुराः ४	दिवता १ सुर २ मरणरहि ३	देउ १ सुर २ मौतरहित ३	देवता १ सुर २ मरणविना ३	देवता	देवता	ठाकुर् १ गोसाइ २	देवता १ ठाकुर २
आदित्याः	[illegible] दिगवर आदितिह	आदित्त १ १२	आदितीकेवेटे १	आदित्यगण	आदित्य	सूर्य्य	आदित्य
विश्वे	विश्वेदेवा	विस्वेदेव १ १३	विश्वेदेवा	विश्वेदेवगण	विश्वेदेव	विश्वेदेव	विश्वेदेव
वसवः	वसु	वसु १ ८	वसु	वसुगण	वसुगण	वसु	वसु
तुषिताः	तुषित्	तुसत १ ३६	तुषित्	तुषितगण	तुषित	तुषित्	तुषित्
आभास्वराः	भास्वर अ	आभास्वर १ ६४	आभास्वर	आभास्वरगण	भास्वर	भास्वर्	भास्वर
अनिलाः	वाव	अनिल १ ४९	हवा १ बयार् २	अनिलगण	वायु १ बसात २ बयारि ३	वातास् १ अनिल २	अनिला
महाराजिकाः	महाराजिक	महाराजिक १ २२	महाराजिक	महाराजिक	महाराजिक	महाराजिक	महाराजिक
साध्याः	साध्या	साध्य १ १२	साध्य	साध्यगण	साध्य	साध्य	साध्य
रुद्राः	रुद्रगण१	रुद्दर १ ११	रुद्र	रुद्रगण	रुद्र	रुद्र	रुद्र
विद्याधराः	विद्याधर्	विद्याधर १ ११ ज्ञात	विद्याधर	विद्याधर	विद्याधर	विद्याधर्	विद्याधर

ग्रं.सं.	संस्कृत	काश्मीरभाषा	पंजाबमुलतानगतमार्त परभाषा	मध्यदेशभाषा	पर्वतीभाषा	मिथिलाभाषा	बंगलाभाषा	उत्कलभाषा
	युगपत् १ एकदा २	इकवटे	इकसमे १ इकीवार २ एककालमें ३	इकट्ठे १ मिलेर कुसम थमेर	एकैबेर	एकहिबेरि १ एकहिकाल २ संगहि ३	युगपद् १ एककालीन २ एकेबारि ३	एकवेलै
५८	सर्वदा १ सदा २	[illegible] हेर सार्वकालवतर	सभ्भकालविषे	नित १ रोज २ हमेश २	सधै १	सगरिकाल १ सभदिन २	सकल्दिन् १ सर्वदा २ सकल्काल ३	सबूदिन
	एतर्हि १ संप्रति २ इदानीं ३ अधुना ४	उन्नि १ येमेविज्य २	इसकालविषे १ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५	अभी १ [illegible] २ अवहीं ३	एकैकालमा १	एखन १	एतत्काल १ एखन २ एइसमय ३	एवुनि
	प्राक्	पूर्वदिशा १ पति [illegible] पूर्वकदीश	पूर्वदिशा १ पहलाकाल २ [illegible] ३ पूर्वदेश	पूर्वदिशा १ [illegible] मिहलावखत २ पूर्वदेश	पहिलोदेशभयाप निका १	पूर्वकाल १ पूर्वदिशा २ पूर्वदेश ३	पूर्वकाल १ पूर्वदेश २ पूर्वदिग ३	पूर्वकाल १ पूर्वदिशा २ पूर्वदिश
	उदक् १	उत्तरदिशा १ [illegible] वखत २ उत्तरदीश	उत्तरदिशा १ उत्तरकाल २ उत्तरदेश ३	उत्तरदिशा १ आगेकावखत २ उत्तरदेश ३	उत्तरदेशकालकोहि हवस १	उत्तरकाल १ उत्तरदिशि २ उत्तरदेश ३	उत्तरकाल १ उत्तरदेश २ उत्तरदिग ३	उत्तरकाल १ उत्तरदेश २ उत्तरदिश ३
	प्रत्यक्	पश्चिमदिशा १ पछमदीश २ [illegible] वखत	पच्छमदिशा १ पिछलाकाल २ पच्छमदेश	पश्चमदिशा १ पछमदेस २ आगेकावखत	पछिपछिका १	पश्चिम १ पश्चिमदेश २ पश्चिमदिशा ३	पश्चिम १ पश्चिमदेश २ पश्चिमदिग ३	पश्चिम १ पश्चिमदेश २ पश्चिमदिशा ३
	अवाक्	दक्षिणदिशा १ दक्षणदीश	दक्षिणदिशा १ दक्षिणदेश २	दक्षिनदिशा १ दक्षणदेश २	दक्षिण	दक्षिणदिशा १ दक्षिणादिशा २	दक्षिण १ दक्षिणदेश २ दक्षिनदिग	दक्षिण १ दक्षिणदेश २ दक्षिणदिशा ३
						इतिमिश्रवरननीयका अव्ययवर्गः		

4. उपसंहार

निष्कर्षवत् ई कहल जा सकैत अछि जे विश्वभरिमे अद्यतन उपलब्ध प्रकाशित/अप्रकाशित अभिलेखीय सामग्रीसभक सूक्ष्म गवेषणासँ ई ज्ञान नि:सृत होइत अछि जे **वरेण्य शब्द–सन्धानी हेनरी टोमस कोलब्रुक मैथिली शब्दकोशशास्त्रक पहिल अध्येता/अनुसन्धाता एवम् पहिल शब्दसंग्रहकर्ता छलाह।** कनेक आओरो बेकछाक' कही त' ई जे मैथिलीभाषी संस्कृतज्ञ भवनाथ मिश्रहुक (1914) बहुमूल्य अवदानसँ 107 वर्ष पूर्वहि एवम् महान फिरिङ्गीद्वय A. F. R. Hoernle & George A. Grierson (1885, 1889)क मैथिलीक पहिल प्रकाशित (परञ्च अपूर्ण) शब्दकोशसँ 80 वर्ष पूर्वहि, आ तहिना अपन समकालीन फिरिङ्गी Francis Buchanan (1810)क मौलिक कृतिअहुसँ 3 वर्ष पूर्वहि 1807 ई.मे निर्मित अपन पुरोगामी एवम् अप्रतिम अवदानकहेतु **हेनरी टोमस कोलब्रुक एहि तुलनात्मक शब्दसंग्रहकलेल मैथिली शब्दकोश–निर्माण जगतमे सदैव स्मरणीय रहताह, स्तुत्य रहताह, अतुल्य रहताह, अमर रहताह।**

अन्त्यटिप्पणी

1. haṛī 'a circular wooden box used for stopping a madman or a thief from running away'
Subhadra Jhā (1958: 32)
हड़ि (प्रा.) — [सं.] 'काठक बेड़ी' गोविन्द झा (1993: 360)
हड़ी 'काठक बेड़ी जे बताह/अपराधीक पाएरमे लगाओल जाइत अछि। wooden log-fetter' Govind Jha (1999: 666)
हड़ि — सं., 'काठक बनल बेड़ी' मतिनाथ मिश्र 'मतंग' (1998: 437)

2. Henry Thomas Colebrookeक बृहत् जीवनवृत्तद' देखू Rocher and Rocher (2012)।

3. ईष्ट इण्डिया कम्पनी कालक प्रसिद्ध भारतविद्याशास्त्रज्ञलोकनिक (Orientalists/Indologists) देववाणी संस्कृतप्रतिक तीव्र व्यामोहक अछैतो कतेकहु नवतुरक परञ्च तीक्षण बुद्धिवाला शोधार्थीलोकनि ("Young Turks") भारतक देशी/स्थानीय भाषासभक (Vernacular languages) अध्ययन–अनुशीलन ओ वर्णन–विश्लेषण कार्यमे दत्तचित्तभए प्रवृत्त भेल

छलाह — जकरा Sheldon Pollock "Vernacular Millennium" कहि अपन मूल्यवान कृतिमे वर्णित–विश्लेषित कएने छथि। एहि "Vernacular Millennium" विषयक विशद् विवेचनहेतु देखू Sheldon Pollock (2006)।

पुष्पिका

ह्नेरी टोमस कोलब्रुककृत हस्तलिखित पाण्डुलिपिक आधिकारिक फोटोकौपी ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनक सौजन्यसँ लेखककेँ तखन प्राप्त भेलैन्हि जखन ओ ई. 2018मे आलेक्साण्डर–फौन–हुम्बोल्ट फाउण्डेशनक सीनियर भिजिटिङ्ग रिसर्च फेलो रूपेँ क्रिष्टिआन–आलब्रेख्ट्स विश्वविद्यालय, कील, जर्मनीमे फ्रान्सिस ब्युकाननक *तुलनात्मक शब्दसङ्ग्रहक* हस्तलिखित पाण्डुलिपि एवम् मैथिली शब्दकोशशास्त्रक उत्पत्ति, विकास, ओ इतिहासमादेँ अनुसन्धानरत छलाह। आलेक्साण्डर–फौन–हुम्बोल्ट फाउण्डेशन, बौन, जर्मनी; ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दन; ओ जर्मनीक कील विश्वविद्यालयक भाषाविज्ञान–ध्वनिविज्ञान विभागक विभागाध्यक्ष प्रो. डा. जौन माइकेल पीटर्सनप्रति लेखक हार्दिक आभार व्यक्त करैत छथि ।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द 1968 *मैथिलीक उद्गम ओ विकास,* कलकत्ता: मैथिली प्रकाशन समिति।

झा, गोविन्द (संयोजक/सम्पादक 1993) *मैथिली शब्दकोश द्वितीय खण्ड,* पटना: मैथिली अकादमी।

झा, गोविन्द 2010 "अन्हारमें ठाढ़ एकटा यूरोपिअन मैथिली भक्त," **मे:** गोविन्द झा (2010) *अनुचिन्तन,* पटना: नवारम्भ, 7–11।

झा, मुकुन्द 1924 *अमरमैथिलभाषाविवृति [अमरसिंहकृत नामलिङ्गानुशासनं नाम अमरकोषःक* मैथिली टीका/अनुवाद], मधुबनी: मैथिली यन्त्रालय।

झा, योगानन्द 1988 " *देशीनाममाला* आ मैथिली," *भाखा* 2: 10, 48–52।

झा, शशिनाथ 1984 " *अमरकोशक* टीकामे उपलब्ध मैथिली शब्द," *मैथिली अकादमी पत्रिका* 4: 3, 66–84।

झा, शशिनाथ 2009 *निबन्धमन्दारमञ्जरी,* दीप–मधुबनी: तीर्थनाथ पुस्तकालय।

झा, शशिनाथ (सम्पादक 2010) *अमर सिंह–विरचितः अमरकोषः [मैथिलीविवृति सहित हिन्दीशब्दार्थयुक्त शब्दसूचि संवलितः, विवृतिकारः वैयाकरण पं. मुकुन्द झा],* दरभङ्गा: मिथिला संस्कृत शोधसंस्थानम्।

धीरज, राम चैतन्य 2013 *भाषा विचार आ मैथिलीक प्राचीन साहित्य,* पटना: शेखर प्रकाशन।

धीरज, राम चैतन्य 2019 *मैथिली भाषाक वैचारिक अस्मिता,* पटना: नवारम्भ।

मिश्र, भव नाथ 1914 *मिथिला शब्द प्रकाशः,* काशी: श्री भूपालचन्द्र वन्दोपाध्याय।

मिश्र 'मतंग', मतिनाथ 1998 *मैथिली शब्द कल्पद्रुम,* जमुथरि–झंझारपुर–मधुबनी: मिश्र बन्धु प्रकाशन।

यादव, रामावतार 2019 "मैथिली भाषा–साहित्यक संरक्षण: चुनौती आ निदान," *आँजुर* २५: ८८, ३—११।

यादव, रामावतार 2020a "कखनहु आठ–आठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु हौदा–कसल हाथीपर सवार एकगोट फिरिङ्गी मैथिली–सेवक: संक्षिप्त जीवनवृत्त," *अनुप्रास* 2: 2, 3–6।

यादव, रामावतार 2020b "हेनरी टोमस कोलब्रुककृत *Comparative Vocabulary* (1807 CE) शीर्षकक हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे उपलब्ध *अमरकोषःक* 370 शब्दक मैथिली पर्याय: संक्षिप्त परिचय," *घर–बाहर* 20: 73, 14–15।

यादव, रामावतार 2021 "मैथिलीक वर्तमान अवस्थितिद' संक्षिप्त टिप्पणी," *अनुप्रास* 2: 3–4, 3–8।

सिंह, गंगानन्द 1950 "अखिल भारतीय प्राच्यविद्यासम्मेलनक चौदहम अधिवेशनक मैथिली शाखाक अध्यक्ष कुमार गंगानन्द सिंहक अभिभाषण 1950," **मे:** देवेन्द्र झा (सङ्कलयिता, 1983) *भाषणत्रयी,* पटना: मैथिली अकादमी, पृष्ठ 37–73।

सिंह, चन्द्रधारी 1957 *अमरसिंहचन्द्रिका,* मधुबनी: राँटी ड्योढ़ी।

सिंह, चन्द्रधारी 2001 *नामलिङ्गानुशासनं नाम अमरकोषः [श्री चन्द्रधारीसिंहशर्मणा विरचितया चन्द्रिकाख्यव्याख्यया समलंकृतः],* आमुखलेखक: काशीनाथ मिश्रः, कामेश्वरनगरम्, दरभङ्गा: कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालयः।

Bhattacharya, Tanmoy 2016 "Inner/outer politeness in Central Magadhan Prākrit languages: Agree as labeling," *Linguistic Analysis* 40: 3–4, 297–336.

Buchanan, Francis C. 1810 *Comparative Vocabularies*, MSS EUR G 16, India Office Records, British Library, London.

Colebrooke, Henry Thomas 1801 "On the Sanscrit and Prācrit languages," *Asiatick Researches*: 7, 199–231.

Colebrooke, Henry Thomas 1807 *APAC MSS IO/San.* 156–157, Asian, Pacific and African Collections, British Library, London.

Cowell, Edward Byles (ed. 1873) *Miscellaneous Essays By H. T. Colebrooke*, *Vol. II*, London: Truebner & Co., 57 and 59, Ludgate Hill.

Fallon, S. W. 1879 A *New Hindustani–English Dictionary with Illustrations from Hindustani Literature and Folklore*, Banaras & London: E. J. Lazarus & Trübner. [Second Edition 1884 Bharati Bhandar, Allahabad]

Hoernle, A. F. R. & George A. Grierson 1885 *A Comparative Dictionary of the Bihārī Language, Part 1,* Calcutta: Bengal Secretariat Press.

Hoernle, A. F. R. & George A. Grierson 1889 *A Comparative Dictionary of the Bihārī Language, Part 2,* Calcutta: Bengal Secretariat Press.

Jha, Govind (ed. 1999) *Kalyani Kosh A Maithili–English Dictionary,* Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series–4.

Jha, Subhadra 1939–40 "Maithili equivalents to vernacular words found in Sarvanand's commentary on *Amarakośa," Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* 21: 1–2, 106–114.

Jhā, Subhadra 1958 *The Formation of the Maithilī Language,* London: Luzac.

Mackintosh, James 1806 *Plan of a Comparative Vocabulary of Indian Languaes,* Bombay: Damotharjee.

Nara, Tsuyoshi 1979 *Avahaṭṭha and Comparative Vocabulary of New Indo–Aryan Languages,* Tokyo: Institute for the Study of Languages and Cultures of Asia and Africa.

Pollock, Sheldon 2006 *The Language of the Gods in the World of Men: Sanskrit, Culture, and Power in Premodern India,* Berkeley, Los Angeles: University of California Press.

Rocher, Rosane and Ludo Rocher 2012 *The Making of Western Indology: Henry Thomas Colebrooke and the East India Company,* London and New York: Routledge.

Sen, Sukumar 1944 "New Indo–Aryan vocables in Sarvānanda's *Ṭīkāsarvasva," Indian Linguistics:* 8: 4, 184–209. [Reprint Edition, 1965, pp. 554–572]

Yadav, Ramawatar (ed. 2021) *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan's Comparative Vocabularies: Facsimile Edition of the British Library, London Manuscript,* Darbhanga (Bihar, India): Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series–23.

Yadav, Ramawatar **Forthcoming** "Toward a historiography of lexicogenesis in Maithili – With special reference to the hitherto unstudied and unpublished hand–written British Library, London MS. of Henry Thomas Colebrooke's *Comparative Vocabulary* (1807 CE)."